BA Part-III Psy
Pap- 5th

नेतृत्व
(Leadership)

आधुनिक समाज मनोविज्ञान में नेतृत्व और अनुयायी अध्ययन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है जिससे समूह की उत्पत्ति होती है। उस समूह के स्तर को कायम रखने के लिए एक नेता की आवश्यकता होती है। प्रत्येक समुदाय में कुछ व्यक्ति होते हैं जिसमें एक व्यक्ति नेता होता है तथा अन्य लोग उसके अनुयायी होते हैं। नेतृत्व के संबंध में अनेक समाज मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने अपना विचार व्यक्त किया है।

नेतृत्व की परिभाषा के संबन्ध में विद्वानों के बीच मतभेद है। इसकी प्राचीन परिभाषाओं में नेतृत्व के किसी खास पक्ष पर बल दिया है जिससे ये परिभाषाएँ अधूरी कही जा सकती है। शेरिफ (Sherif) ने अपनी परिभाषा में कहा है,- "नेता वह है जो समूह के स्थिति संबंधों में सबसे ऊपर होता है।" इस परिभाषा में नेता के स्थान का वर्णन किया गया है उसके प्रभावशीलता को छोड़ दिया गया है।

द्विवेदी (Dwivedi) ने कहा है,- "नेतृत्व का अर्थ दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करने की वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा उन्हें कुछ निश्चित लक्ष्यों की ओर संचारित किया जाता है।" द्विवेदी की परिभाषा को पूर्ण परिभाषा मानना गलत है क्योंकि इसमें सिर्फ नेता के प्रभाव का ही वर्णन किया गया है तथा अनुयायियों के

(I) ऐसे समूह के सदस्यों में घनिष्ठता तथा सहयोग की भावना अधिक होती है। फलतः सदस्यों के बीच वैयक्तिक सम्बन्ध अधिक पाये जाते हैं।

(II) ऐसे समूह का निर्माण किसी विधि-विधान के अनुसार नहीं बल्कि स्वाभाविक रूप से होता है।

(III) ऐसे समूह के सदस्यों 'हम लोग की भावना' (We feeling) अधिक होता है।

(IV) ऐसा समूह औपचारिक समूह की अपेक्षा अधिक टिकाऊ (Stable) होता है।

(V) ऐसे समूह के सदस्यों की संख्या प्रायः कम होती है। फलतः इसका आकार (Size) औपचारिक समूह से छोटा होता है।

उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अनौपचारिक समूह बहुत कुछ प्राथमिक समूह (Primary group) से मिलता है। लिण्डग्रेन (Lindgren, 1973) ने कहा है- "प्राथमिक समूह को औपचारिक होने की सम्भावना काफी अधिक होती है।"

प्रभाव को नजरअंदाज कर दिया गया है।

नेतृत्व की अधुनिक परिभाषा में नेता तथा अनुयायियों के बीच अन्त: वैयक्तिक प्रभाव को नेतृत्व माना गया है। क्रेच, क्रचफील्ड तथा बैलेची के अनुसार "नेता समूह के वैसे सदस्य समूह की क्रियाओं को प्रभावित करते हैं नेता हैं। "Leaders are those members of the group who influence the activities of the group."

लेपियर तथा फ्रांसवर्थ (Lapiere and Fransworth) के अनुसार "नेतृत्व एक प्रकार का व्यवहार है जो समुदाय के अन्य सदस्यों के व्यवहार को इतना प्रभावित करता है जितना कि अन्य सदस्यों के व्यवहार नेता के व्यवहार को नहीं प्रभावित कर पाते हैं।" ("Leadership is the behaviour that effects the behaviour of other people more than their behaviour effects that of the leader.")

उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर मुख्य रूप से तीन बातें पाते हैं -

1. परिभाषा में पहली बात तो यह पाते हैं कि नेता अपने व्यवहार से दूसरों को प्रभावित करता है। इस अर्थ में समूह का प्रत्येक सदस्य नेता है, क्यों कि सभी व्यक्ति दूसरों को प्रभावित करता है। लेकिन किसी व्यक्ति का प्रभाव समूह पर अधिक पड़ता है। नेता वही व्यक्ति हो सकता है जिसका प्रभाव सदस्यों पर सबसे अधिक होता है।

2. नेतृत्व में अन्तर्वैयक्तिकता देखी जाती है। नेता के व्यवहार से अनुयायी तथा अनुयायी के व्यवहार से नेता भी प्रभावित होता है। अन्तर केवल इतना है कि नेता का व्यवहार अनुयायियों को अत्यधिक प्रभावित करता है।

5. नेतृत्व के लिए प्रभाव की मात्रा का होना भी आवश्यक है। उनमें इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह अनुयायियों पर प्रभाव डाल सके।

सत्तावादी नेता तथा प्रजातांत्रिक नेता में अंतर
(Difference between Authoritarian Leader and Democratic Leader.)

सत्तावादी एवं प्रजातांत्रिक नेतृत्व की कुछ अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं उन्हीं विशेषताओं के आधार पर दोनों में कुछ समानताओं के बावजूद कुछ अन्तर है। लिपिट, ह्वाइट, न्यूकॉम्ब तथा हार्टले ने प्रजातांत्रिक और सत्तावादी नेतृत्व के बीच निम्नलिखित अन्तर बताया है -

1. सत्तावादी समूह में नेता तथा अनुयायियों के बीच की सामाजिक दूरी अधिक होती है। नेता का अनुयायियों से सीधा सम्पर्क नहीं होता है। सिर्फ छोटे समूह में ही प्रत्येक सदस्य नेता से सीधे सम्बन्धित होते हैं, लेकिन अनुयायियों में आपसी सम्बन्ध नहीं होता है। जबकि प्रजातांत्रिक नेतृत्व में नेता और अनुयायियों के बीच सीधा सम्पर्क होता है। इससे छोटे समूह में भी सदस्य एवं नेता आपस में मिलते-जुलते हैं।

2. सत्तावादी नेता समूहों की नीतियों तथा योजनाओं के निर्माण में मनमानी करता है। वह सदस्यों से इस संबंध में राय नहीं लेता है जबकि प्रजातांत्रिक नेता के नीतियों का निर्धारण सदस्यों की राय से करता है।

3. सत्तावादी नेता कार्य-अभिमुखी (Task Oriented) होता है। वह सदस्यों की कल्याण (Member welfare) की अपेक्षा समूह कार्य पर अधिक बल देता है। वह सदस्यों के नुकसान को नहीं देखकर अपने लक्ष्य की ओर ध्यान देता है। इसके ठीक विपरीत प्रजातांत्रिक नेता सदस्य-अभिमुखी (Member Oriented) होता है, यह समूह कार्य के साथ साथ सदस्यों के कल्याण को भी ध्यान में रखता है।

4. सत्तावादी नेता अपने समूह के लक्ष्यों का निर्धारण खुद करता है, दूसरे सदस्यों को इसकी जानकारी भी नहीं होता है। वह स्वयं सदस्यों के बीच कार्यों का वितरण करता है। दूसरी ओर प्रजातांत्रिक नेतृत्व में अधिकारों का विकेन्द्रीकरण (decentralization) होता जाता है। इसमें समूह का लक्ष्य सभी सदस्यों के साथ मिलकर निर्धारण करता है, जिससे सभी सदस्यों को लक्ष्य की जानकारी होती है। कार्यों का बटवारा भी सदस्यों की राय से ही करता है।

5. सत्तावादी नेतृत्व में सदस्यों का आपसी संबंध ठीक नहीं होता है। वे लोग अपने नेता को खुश रखना चाहते हैं तथा नेता के आज्ञाकारी होते हैं, लेकिन प्रजातांत्रिक नेता के सदस्यों का आपसी संबंध मैत्रीपूर्ण होता है। इसमें अनुयायी नेता का आज्ञा पालन अपनी इच्छा से करते हैं।

6. सत्तावादी नेता आक्रमणकारी होता है। यह हमन में विश्वास करता है। लेकिन प्रजातांत्रिक नेता अपने अनुयायियों के प्रति सहानुभूति एवं मित्रभाव का प्रदर्शन करता है।

7. सत्तावादी नेता किसी कार्य में स्वयं पहल करता है और सदस्यों को उसे पूरा करने का आदेश देता है। परंतु प्रजातांत्रिक नेता किसी भी कार्य को करने के पहले सदस्यों से सुझाव प्राप्त करता है और उस पर अमल करता है। इसमें बहुमत को ध्यान में रखा जाता है।

8. सत्तावादी नेता अपने कार्य के लिए समूह के सदस्यों के प्रति उत्तरदायी नहीं होता है। किसी भी सदस्य को पुरस्कार या दंड अपनी इच्छा से दे सकता है लेकिन प्रजातांत्रिक नेता सदस्य को मिलने वाले पुरस्कार या दण्ड के संबंध में स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है।

9. सत्तावादी नेता सदस्यों में फूट डालकर उनपर शासन करता है। वह सदस्यों के बीच भेद-भाव बनाये रखने का प्रयास करता है। इसके विपरीत प्रजातांत्रिक नेता लोगों में मेल-जोल का भाव पैदा करता है। जहाँ आवश्यकता होती है वहां मध्यस्थता करके मनमुटाव को दूर करता है।

10. सत्तावादी नेतृत्व के सदस्यों में असंतुष्टि अधिक होती है। समूह की उत्पादकता कम होती है। नेता की उपस्थिति में भय के कारण उत्पादन बढ़ता है। लेकिन अनुपस्थिति में उत्पादन घट जाता है। दूसरी ओर प्रजातांत्रिक नेतृत्व में सदस्यों में संतुष्टि अधिक होती है नेता की उपस्थिति और अनुपस्थिति का उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सत्तावादी एवं प्रजातांत्रिक नेतृत्व में बहुत अन्तर है। दोनों के कार्य करने के तरीके में अन्तर है। किसीभी समुदाय या देश के लिए सत्तावादी की अपेक्षा प्रजातांत्रिक नेतृत्व अच्छा होता है।